ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य

समृद्धि संजय सुर्वे

11/बी, पवित्र आंगण,थेरगाव, चिंचवड, पुणे 33

डॉ. अनिल काळे

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय पुणे की विद्यावाचस्पति (पीचड. डी.)

अनुसंधान केंद्र हिंदी विभाग : प्रो. रामकृष्ण मोरे कला , वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय आकुर्डी , पुणे 44

प्रस्तावना: भारत शासन सत्ता मुघलों से अंग्रेजों के शासन काल तक बदलती आयी। देश में कई विदेशी शासक आए। उनमें आर्य, युनानी, मुगल, ब्रिटिश फ्रान्सीसी , पोर्तुगाली इन सभी का एक का एक कार्यभार है। देशभक्ती की चर्चाएँ छिडनी लगी। देश दिशाहीन होते हुए लगने लगा। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों की कलम ने देश की एकता के बंधन में मानवता जगायी। भारतीय साहित्यकारों ने साधारण जन में राष्ट्रीयता की भावना भर दी। इसके फलस्वरूप सभी लोग आपसी मनमुटाव धर्म संप्रदाय भूलकर राष्ट्र के स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हुए। ईसी को चलते आजादी प्राप्त हुई।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

इस स्वाधीनता आंदोलन में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उसमें मैथिलीशरण गुप्त, भारतेंदू हरिश्चंद्र, सुभद्रा कुमारी चौहान ,रामधारी सिंह दिनकर की रचनाएँ राष्ट्रप्रेम ,जनजागरण से भरी है ।

माखन लाल चतुर्वेदी जी ने पुष्प की अभिलाषा कविता में राष्ट्रप्रेम को जताते हुए फूल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है -

" चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी हो ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमी पल शीश चढाने
जिस पथ जावे वीर अनेक " 1

फूल के माध्यम से राष्ट्र के लिए समर्पित भाव दिखाई देते है।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

यही भावना जनमानस मे पिरोने का काम साहित्य नही किया है। जयशंकर प्रसाद जी केचंद्रगुप्त नाटक में कुछ पंक्तिया ऐसी है-

" हिमाद्री तुंग श्रृंग प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ - प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है , बढे चलो- बढे चलो। " 2

मातृभूमी स्वतंत्रता हेतू निरंतर आगे चलने हेतू पुकार रही है । यह पंक्ती राष्ट्रप्रेम और स्वाधीनता को प्रेरित करती है।

" बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।। " 3

शौर्य बलिदान प्रेरणा ये समुची भावनाएँ कवियों की साहित्यकारों की कविता मे खूब वर्णित है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गयी यह कविता आंदोलन की सुरुवात सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में लक्ष्मीबाई की भूमिका और बलिदान को प्रस्तुत कर रही है । अदम्य साहस शौर्य को कवियत्री ने बडी सुंदरता से दर्शाया है। ये वीर रस की कविता छायावाद के दौर में लिखी गई है। हिंदी साहित्य मे क्रांति लेखन राष्ट्रवादी काव्य लेखन में श्रीकृष्ण सरल जी का महत्वपूर्ण योगदान है । देश की रक्षा के दायित्व हेतु लिखी यह कविता देशप्रेम से ओतप्रोत है।

" राष्ट्र के शृंगार मेरे देश के साकार सपनों
देश की स्वाधीनता पर आँच तुम आने न देना
जिन शहीदों के लहू से लहलहाया
चमन अपना उन वतन के लाडलों की
याद मुरझाने न देना
देश की स्वाधीनता पर आँच तुम आने न देना। " 4

कवि भारत के देशवासीयों को देश के लिए बलिदान देने वाले सेनानियों की याद दिलाता है । इन्ही सेनानियों की बलिदान से प्राप्त हुई है । इसलिए इनका बलिदान व्यर्थ न जाए यही कवि की इच्छा है।

भारतेंदु युग के कवियों ने परंपरागत राष्ट्रीय भावना से आगे चलकर अंग्रेज सत्ता के खिलाफ आवाज उठाई । भारत हिंदू अंग्रेजों की शोषण के तरीकों पर व्यंग करते हुए लिखते है

-" भीतर -भीतर सब रस चूसै
हंसि हंसि के तन-मन धन मूसै
जाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखी साजन नहीं अंगरेज"5

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है कि- " नविन विचारधारा के बीच भारतेंदू की वाणी का सबसे ऊँचा स्वर देशभक्ती का था । नीलदेवी , भारत दुर्दशा आदि नाटकों के भीतर आई हुई कविताओं में देश दशा की जो मार्मिक व्यंजना हुई है ,वह तो है ही ; बहुत-सी स्वतंत्र कविताएँ भी उन्होंने लिखी, जिसमें कहीं देश की अतित गौरव गाथा का गर्व , कहीं वर्तमान अधोगती की क्षोभ भरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जगी हुई चिंता आदि अनेक अनेक पुनीत भावोंका संचार पाया जाता है।"6

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

" रामधारी सिंह दिनकर की वीर रस भरी क्रांति की आग उगलती कविताएँ देशभक्त वीरों को उद्वेलीत करने वाली है। वे मानकर चलते थे की यह धैर्य और विश्वास का समय नही ,देश की स्वाधीनता के लिए अब धैर्य नही युद्ध और क्रांति की आवश्यकता है । " 7

कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता के माध्यम से देश के नवयुवकों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मर मिटने के लिए प्रेरित किया है।-

" बलिवेदी, सखे प्रज्वलित माँग रही ईंधन क्षण क्षण
आओ युवक लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन
भस्मसात हो जाने दो ये प्रलय उमंगे जीवन की
अरे सुलगने दो बलिवेदी, चढने दो बलि जीवन की। " 8

इस प्रकार कहा जा सकता है की हिंदी कवियों ने देश की स्वाधीनता आंदोलन मे कविता के माध्यम से देश के जन मानस में चेतना का संचार किया। स्वाधीनता की प्रेरणा जगायी। राष्ट्रीय काव्य ,चेतना का वाहक होता है । देश के प्रति समर्पण स्फूर्ति का भाव कविताओं द्वारा पिरोया गया। हिंदी कविता राष्ट्रीय भावों की समग्र कविता है। अंग्रेजी सत्ता के विद्रोह मे त्याग और बलिदान की भावना जागृत करने का कार्य कविता द्वारा किया गया है।

संदर्भ:

1) काव्य कुसुम काव्य संग्रह, संपादन प्रो. डॉ. माया सिंह, पुष्प की अभिलाषा , माखनलाल चतुर्वेदी पृ. 11
2) चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ. 153
3) स्वतंत्रता पुकारती, संपादक नंदकिशोर नवल, सुभद्राकुमारी चौहान, पृ.198
4) राष्ट्र के शृंगार - श्रीकृष्ण सरल, हिंदी विशिष्ट कक्षा12 वी पृ. 162
5) भारतेंदु ग्रंथावली : भारतेंदु ग्रंथावली , भाग 2 पृ.811
6) हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ.542
7) राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला : डॉ. शेखरचंद्र जैन, पृ.142
8) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र , पृ.536

Cite This Article:

सुर्वे स. स. ***(2024).*** *स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 39–41). **EIIRJ**. https://doi.org/10.5281/zenodo.10651997

.